शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
294 Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com/* https://doi.org/10.31995/shodhmanthan

भारतीय परिवारों में वृद्धों की स्थिति (जनपद बिजनौर का समाजशास्त्रीय अध्ययन)

डॉ० गौतम बनर्जी
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विज्ञान
साहू जैन कॉलेज, नजीबाबाद (बिजनौर)
ईमेलः @gmail.com

सारांश

वृद्धावस्था मानव जीवन की एक गंभीर, जटिल एवं सार्वभौमिक समस्या हैं। तीव्र परिवर्तनों के वर्तमान दौर में परिवार की संरचना एवं प्रकार्यों में हो रहे परिवर्तनों के फलस्वरूप परिवार अनाथों, विधवाओं, विधुरों तथा वृद्धों की सहायता एवं सुरक्षा देने का कार्य पूर्व की भाँति नहीं कर पा रहा है। यही कारण है कि आज वृद्धों और परिवार के बीच सफल समायोजन नहीं हो पा रहा है और वृद्धों का पारिवारिक जीवन समस्याग्रस्त हो रहा है।

आधार पीठिका

वृद्धावस्था एक स्वाभाविक एवं प्राकृतिक स्थिति है। अतः वृद्धावस्था एवं इसकी समस्याएँ इस संसार में मानव जीवन एवं सभ्यता के प्रारम्भिक काल से ही अस्तित्व में रही है। वास्तव में वृद्धावस्था मानव जीवन की गम्भीर एवं जटिल समस्या है जो अपने पहलू में अनेकानेक समस्याएँ समेटे रहती है। बेन्जामिल श्लॉस ने वृद्धावस्था की बहुमुखी समस्याओं के सम्बन्ध में लिखा है कि वृद्धावस्था एक विशिष्ट बीमारी के समान हैं यह वह बीमारी है जो प्रत्येक व्यक्ति को लगती है, वह व्यक्ति जो जीवित रहता है, अन्य सब बीमारियाँ इस बीमारी को निरपवाद रूप से जकड़ लेती है। वृद्धावस्था में शारीरिक एवं मानसिक दुर्बलता के साथ–साथ व्यक्ति को परिवार एवं सामुदायिक समायोजन, एकाकीपन एवं अलगाव, खाली समय का सृजनात्मक उपयोग न होना तथा स्वयं एवं आश्रितों के पोषण हेतु अपर्याप्त आय आदि अनेकानेक समस्याएँ घेरे रहती है।

आज की दुनिया में वृद्धों को फालतू वस्तु समझने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है, इसलिए लोग वृद्धावस्था से घबरानरे लगे हैं। अतः साम्प्रत भारत में वृद्ध लोगों की पारिवारिक स्थिति कैसी है तथा उनके परिवार का स्वरूप व परिवार में वृद्धावस्था के कारण उनकी सत्ता व प्रभाव में क्या–क्या अन्तर आया है और परिवार के सदस्यों के साथ उनकी अंतःक्रियाओं का स्वरूप कैसा है? प्रस्तुत लेख इसी प्रयोजन से प्रेरित एक प्रयास है।

शोध प्रारूप

जनपद के ग्रामीण व नगरीय दोनों क्षेत्रों के 500 वृद्धों को सम्मिलित किया गया है। वृद्ध वर्ग से तथ्यों के संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

उपलब्धियाँ

परिवार, मानव समाज का सर्वाधिक प्राचीन, मौलिक, महत्वपूर्ण एवं सार्वभौमिक संगठन है। विश्व के प्रत्येक समाज में, सामाजिक विकास के सभी युगों में, परिवार के दर्शन अवश्य होते हैं। परिवार समाज के सभी संगठनों का केन्द्र होता है। परिवार व्यक्ति की आधारभूत सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। ततीव्र परिवर्तनों के वर्तमान युग में परिवार की संरचना एवं प्रकार्यों में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं। आधुनिक काल में परिवार के अन्तर्गत संरचनात्मक और प्रकार्यात्मक दोनों ही प्रकार के परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे हैं। परिणामस्वरूप परिवार के कार्य बड़े परिसीमित होते जा रहे हैं। इसी संदर्भ में परिवार अनाथों, विधवाओं, विधुरों एवं वृद्धों आदि की सहायता एवं सुरक्षा देने का कार्य भी ठीक से नहीं कर पा रहा है। यही कारण है कि आज के परिवार वृद्धों के साथ समायोजन करने में असमर्थ हो रहे हैं। फलतः वृद्धों का जीवन समस्याग्रस्त हो रहा है। परिवार में वृद्धों की दयनीय स्थिति को भीष्म साहनी की कहानी चीफ की दावत सही रूप से उजागर करती है, जिसमें अपनी शान में बट्टा समझकर बुढ़िया माँ को छिपा दिया जाता है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत वृद्धों की पारिवारिक स्थिति एवं परिवार से उनकी प्रत्याशाओं एवं पारिवारिक सामन्जस्य हेतु उनके सुझावों को जानने का प्रयास किया गया है। इसके अन्तर्गत वृद्धजनों के परिवार का ढाँचा, परिवार में पूर्वकाल में तथा वर्तमान में उनकी सत्ता एवं प्रभाव परिवार के सदस्यों के साथ उनकी अंतःक्रियायें, वृद्ध लोगों का पारिवारिक गतिविधियों से लगाव अविा विलगाव आदि की जानकारी सम्मिलित की गई है।

वृद्धजनों के परिवार का ढाँचा

वृद्धजनों की पारिवारिक स्थिति पर विचार करने हेतु पहले उनके परिवार के ढाँचे पर विचार करना उचित प्रतीत हुआ। इस सम्बन्ध में उनके विचार सारिणी–1 में प्रदर्शित किये गये हैं। सारिणी–1 के तथ्यों से ज्ञात होता है कि समग्र में सर्वाधिक संख्या 36.40 प्रतिशत उन परिवारों की है, जिनमें पति अथवा पत्नी अथवा पति–पत्नी तथा उनके अविवाहित बच्चे निवास करते हैं, सबसे कम संख्या 10 प्रतिशत उन परिवारों की है जिनमें पति अथवा पत्नी अकेले ही रहते हैं। अध्ययन के अन्तर्गत उन परिवारों की संख्या जिनमें पति–पत्नी दोनों ही निवास करते हैं तथा उन परिवारों की संख्या में जिनमें पति अथवा पत्नी अथवा पति–पत्नी तथा उनके विवाहित एवं अविवाहित बच्चे निवास करते हैं, लगभग समान हैं। किन्तु ग्रामीण क्षेत्रों तथा नगरीय क्षेत्रों में वृद्धों के परिवारों का ढाँचा देखकर वैभिन्य दिखाई देता है। ग्रामीण क्षेत्रों में सर्वाधिक संख्या 44.80 प्रतिशत उन परिवारों की है जिनमें पति अथवा पत्नी अथवा पति–पत्नी तथा उनके अविवाहित बच्चे रहते हैं। दूसरे स्थान पर वे परिवार आते हैं जिनमें पति अथवा पत्नी अथवा पति–पत्नी तथा उनके अविवाहित एवं विवाहित बच्चे रहते हैं। तृतीय स्थान पर वे परिवार आते हैं जिनमें मात्र पति–पत्नी रहते हैं तथा चतुर्थ स्थान पर वे परिवार आते हैं जिनमें केवल पति अथवा केवल पत्नी निवास करती है। इसके विपरीत नगरीय क्षेत्रों की सूचनाएँ देखने से प्रकटित होता है कि उनमें सर्वाधिक संख्या 43.20 प्रतिशत उन परिवारों की है जिनमें पति एवं

पत्नी दोनों मिलकर रहते हैं तथा दूसरे स्थान पर वे परिवार आते हैं जिनमें पति अथवा पत्नी अथवा उनके अविवाहित बच्चे निवास करते हैं। तृतीय स्थान पर अकेला पति अथवाव अकेली पत्नी वाले परिवार देखे गये हैं तथा चौथे वर्ग में वे परिवार आते हैं जिनमें पति अथवा पत्नी अथवा पति–पत्नी तथा उनके विवाहित एवं अविवाहित बच्चे निवास करते हैं। ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों के सूचनादाताओं के परिवारों के ढाँचे पर तुलनात्मक रूप से गहराई से विचार करने पर यह उल्लेखनीय तथ्य सामने आता है कि ग्रामीण क्षेत्रों के परिवारों पर आज भी सामूहिकता एवं समष्टिवादी भावनाएँ प्रभावी हैं, जबकि नगरीय परिवार आज व्यक्तिवादिता एवं भौतिकता से प्रभावित प्रतीत होते हैं।

सारणी संख्या–1 : वृद्धों के परिवार का ढाँचा

परिवार का स्वरूप	वृद्धों की संख्या		
	ग्रामीण	नगरीय	योग
अकेला पति अथवा पत्नी	10 (4.00)	40 (16.00)	50 (10.00)
पति–पत्नी दोनों	28 (11.20)	108 (43.20)	136 (27.20)
पति अथवा पत्नी अथवा पति–पत्नी तथा उनके अविवाहित बच्चे	112 (44.80)	70 (28.00)	182 (36.40)
पति अथवा पत्नी अथवा पति–पत्नी तथा उनके विवाहित एवं अविवाहित बच्चे	100 (40.00)	32 (12.80)	132 (26.40)

परिवार में वृद्धों की सत्ता एवं प्रभाव

परम्परागतात्मक भारतीय संयुक्त परिवार व्यवस्था के अन्तर्गत परिवार की सत्ता परिवार के वयोवृद्ध व्यक्ति के हाथ में होती थी अर्थात् परिवार का वयोवद्ध व्यक्ति के हाथ में होती थी अर्थात् परिवार का वयोवृद्ध व्यक्ति परिवार का कर्ता अथवा मुखिया कहलाता था। परिवार के समस्त सदस्यों के जीवन से सम्बन्धित समस्त निर्णय लेने का वही अधिकारी होता था, किन्तु आधुनिक काल में वृद्ध लोगों की स्थिति में भौतिकवादी एवं व्यक्तिवादी मूल्यों के फलस्वरूप बहुत अधिक परिवर्तन हो रहा है। परिवार की सत्ता वृद्धों के हाथ से युवाओं, जो परिवार की उत्पादन प्रणाली में सक्रिय भूमिका निभाते हैं, के हाथों में हस्तांतरित हो रही है। अतः प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत वृद्ध लोगों की पारिवारिक स्थिति पर विचार करते हुए यह जानकारी प्राप्त करना नितांत आवश्यक था कि परिवार में उनकी सत्ता एवं प्रभाव आज भी वृद्धावस्था के फलस्वरूप पूर्ववत है या अंतर आया है। इस सम्बन्ध में उनके विचार सारिणी संख्या–2 में प्रदर्शित किए गये हैं।

सारिणी संख्या–2 : वृद्धों की सत्ता एवं प्रभाव

परिवार की सत्ता	ग्रामीण		नगरीय		योग	
	पूर्व में	वर्तमान में	पूर्व में	वर्तमान में	पूर्व में	वर्तमान में
स्वयं के हाथ में	235 (94.00)	165 (66.00)	242 (96.80)	220 (88.00)	477 (95.40)	385 (77.00)
अन्य सदस्य के हाथ में	15 (6.00)	85 (34.00)	08 (3.20)	30 (12.00)	23 (4.60)	115 (23.00)
योग	250 (100.00)	250 (100.00)	250 (100.00)	250 (100.00)	500 (100.00)	500 (100.00)

सारणी संख्या–2 के तथ्यों से स्पष्ट होता है कि वृद्धावसाि से पूर्व की अवस्था में अधिकांश वृद्धों 94.40 प्रतिशत के स्वयं के हाथों में परिवार की सत्ता थी और परिवार की समस्त गतिविधियों पर उनका निर्णायक प्रीाािव था, किन्तु वर्तमान में 77 प्रतिशत सूचनादाताओं के हाथ में उनके परिवार की सत्ता रह गई है। यह स्थिति सरसरे तौर पर अधिक गम्भीर नहीं दिखाई देती है, किन्तु सारिणी संख्या–1 के तथ्यों से सपष्ट देखा जा सकता है कि प्रथम तीन श्रेणियों (अकेला पति अथवा पत्नी, पति–पत्नी, दोनों, पति–पत्नी एवं उनके अविवाहित बच्चे) के परिवारों की संरचना ऐसी है जिसमें परिवार की सत्ता वृद्धों के हाथ में रहनी ही थी और आज भी उन्हीं के हाथों में रहनी है। वास्तव में पारिवारिक संरचना की चौथी श्रेणी (पति–पत्नी तथा उनके विवाहित एवं अविवाहित बच्चे) में सत्ता का परिवर्तन देखा जाना चाहिए, जिसे सारिणी संख्या–3 द्वारा उजागर किया जा सकता है।

सारिणी संख्या–3 के तथ्यों से स्पष्ट होता है कि पूर्व में 82.58 प्रतिशत वृद्धों के हाथ में अपने परिवार की सत्ता थी और वर्तमान मेें मात्र 12.88 प्रतिशत वृद्धों के हाथ में परिवार की सत्ता रह गई है। परिवार की सत्ता पर अन्य सदस्यों के संदर्भ में विचार करने पर स्पष्ट होता है कि पूर्व में मात्र 17.42 प्रतिशत परिवारों में सत्ता अन्य सदस्यों के हाथ में थी, जो अब 87.12 प्रतिशत के हाथ में हो गई है। इस सम्बन्ध में गाँव एवं नगर के वृद्धों की सि्िित में कोई अंतर नहीं है। इस प्रकार तथ्य हमें इस निष्कर्ष पर पहुँचाते हैं कि वर्तमान समय में परिवार की सत्ता एवं प्रभाव वृद्धों के हाथ से छिनकर परिवार के अन्य सदस्यों के हाथों में हस्तान्तरित हो रहा है।

सारिणी संख्या–3 : परिवार में वृद्धों की सत्ता एवं प्रभाव

परिवार की सत्ता	ग्रामीण		नगरीय		योग	
	पूर्व में	वर्तमान में	पूर्व में	वर्तमान में	पूर्व में	वर्तमान में
स्वयं के हाथ में	85 (85.00)	15 (15.00)	24 (75.00)	02 (6.25)	109 (82.58)	17 (12.88)
अन्य सदस्य के हाथ में	15 (15.00)	85 (85.00)	08 (25.00)	30 (93.75)	23 (17.42)	45 (87.12)
योग	100 (100.00)	100 (100.00)	32 (100.00)	32 (100.00)	132 (100.00)	132 (100.00)

परिवार के सदस्यों के साथ अंतःक्रियाएँ

ऐसा देखा गया है कि वृद्धावस्था से पूर्व परिवार के अन्य सदस्यों के साथ व्यक्ति जिन सम्बन्धों एवं अंतःक्रियाओं में बंधा रहता है, वृद्धावस्था काल में उनमें परिवर्तन हो जाता है। आज लोगों की भौतिकवादी एवं व्यक्तिवादी सोच के अंतर्गत युवावस्था में व्यक्ति की छवि एक 'कमाऊ' सदस्य की होती है और वृद्धावस्था एक 'कमाऊ' व्यक्ति को 'आश्रित' व्यक्ति में परिवर्तित कर देती है। अतः वृद्धों के साथ परिवार तथा परिवार से बाहर भी लोगों के सम्बन्धों में पूर्व जैसी रूचि नहीं रहती। अतः प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत वृद्धों से यह जानना भी आवश्यक समझा गया कि परिवार के सदस्यों के साथ उनके सम्बन्ध एवं अंतःक्रियाएँ कैसी हैं? इस सम्बन्ध में उनके प्रत्युत्तर सारिणी संख्या–4 में प्रदशित किये गये हैं–

सारणी संख्या–4 : परिवार के सदस्यों के साथ अंतःक्रियाएँ

अंतःक्रियाओं का स्वरूप	वृद्धों की संख्या		
	ग्रामीण	नगरीय	योग
पूर्ववत् एवं सामान्य	68 (27.20)	150 ((60.00)	218 (43.60)
कुछ–कुछ परिवर्तित	102 (40.80)	48 (19.20)	150 (30.00)
स्पष्टतः परिवर्तित	80 (32.00)	52 (20.80)	132 (26.40)
योग	250 (100.00)	250 (100.00)	500 (100.00)

सारणी संख्या–4 से स्पष्ट होता है कि अधिसंख्यक वृद्धों 43.60 के सम्बन्ध परिवार के सदस्यों के साथ पूर्ववत् एवं सामान्य है, 30 प्रतिशत वृद्धों के सम्बन्ध में कुछ–कुछ परिवर्तन अनुीाव किया गया है तथा 26.40 प्रतिशत वृद्धों के सम्बन्ध स्पष्टतः परिवर्तित हुए हैं। सारिणी में यह भी देखा जा सकताक है कि नगरीय वृद्धों में अधिकांश 60 प्रतिशत वृद्धों के सम्बन्ध पूर्ववत् एवं सामान्य हैं, जबकि ग्रामीण वृद्धों के सम्बन्ध पूर्ववत् एवं सामान्य हैं, जबकि ग्रामीण वृद्धों की संख्या मात्र 27.20 प्रतिशत है। इसी प्रकार स्पष्टतः परिवर्तित सम्बन्ध, ग्रामीण वृद्धों में 32 प्रतिशत, नगरीय वृद्धों में 20.80 प्रतिशत की अपेक्षा अधिक देखे गये। कुछ–कुछ परिवर्तित श्रेणी के अंतर्गत भी ग्रामीण वृद्ध 40.80 प्रतिशत नगरीय वृद्धों 19.20 प्रतिशत की अपेक्षा अधिक देखे गये। ग्रामीण एवं नगरीय वृद्धों में इन तीन श्रेणियों में बहुत अधिक अंतर के पीछे प्रमुख कारण यह रहा है कि सारिणी संख्या–1 में प्रदर्शित पारिवारिक संरचना की प्रथम श्रेणी अर्थात् अकेला पति अथवा पत्नी वाले परिवारों में तो कुछ परिवर्तन होना ही नहीं था और उनकी संख्या ग्रामीण क्षेत्रों में मात्र 4 प्रतिशत थी, जबकि नगरीय क्षेत्र की 16 प्रतिशत थी।

इसी प्रकार दूसरे पारिवारिक संरचना की दूसरी श्रेणी में केवल पति–पत्नी रहते हैं, जिसमें परिवर्तन के अवसर बहुत क्षीण होते हैं और इस वर्ग में भी ग्रामीण क्षेत्रों में 11.20 प्रतिशत जबकि नगरीय क्षेत्र में 43.20 प्रतिशत सूचनादाता थें इसलिए पूर्ववत् एवं सामान्य सम्बन्धों का प्रतिशत नगर में अधिक तथा ग्रामीण क्षेत्रों में कम रहा। इसी प्रकार पारिवारिक संरचना की तीसरी व चौथी श्रेणी के परिवारों के परिवर्तन के अवसर अधिक थे और इन दोनों श्रेणियों में ग्रामीण

वृद्धों की संख्या क्रमशः 44.80 प्रतिशत एवं 40 प्रतिशत थी, जबकि नगरीय वृद्धों में 28 प्रतिशत एवं 12.80 प्रतिशत थी। इसीलिए कुछ–कुछ परिवर्तित व स्पष्टतः परिवर्तित वर्ग में ग्रामीण वृद्ध अधिक (क्रमशः 40.80 प्रतिशत एवं 32 प्रतिशत) रहे, जबकि नगरीय सूचनादाता (क्रमशः 19.20 प्रतिशत एवं 20.80 प्रतिशत) कम रहे।

सारिणी संख्या–4 के तथ्यों के विश्लेषण से यह भी स्पष्ट होता है कि वृद्धों की वृद्धावस्था के फलस्वरूप इनकी कमाऊ भूमिका में परिवर्तन हो जाने के कारण उनके परिवार के सदस्यों ने उनके साथ अपनी अंतःक्रियाओं में परिवर्तन कर लिया, लेकिन एक प्रश्न यह भी उठता है कि क्या वृद्धों में भी परिवार के सदस्यों की प्रतिक्रियाओं के प्रत्युत्तर में अथवा स्वाभाविक तौर पर परिवार की गतिविधियों के साथ अपना लगाव यथावत रखा है अथवा कम कर लिया है? इस सम्बन्ध में वृद्धों से जानकारी प्राप्त की गई जिसे सारिणी संख्या–5 में प्रदर्शित किया गया है–

ोग
(43.60)
(30.00)
(26.40)
100.00)

सारिणी संख्या–5 : पारिवारिक गतिविधियों से लगाव

पारिवारिक गतिविधियों से लगाव	वृद्धों की संख्या		
	ग्रामीण	नगरीय	योग
पूर्ववत् है	169 (67.60)	199 (79.60)	(73.60)
पूर्ववत् नहीं	81 (32.40)	51 (20.40)	132 (26.40)
योग	250 (100.00)	250 (100.00)	500 (100.00)

सारिणी संख्या–5 के तथ्यों से स्पष्ट होता है कि अधिकांश वृद्ध 73.60 प्रतिशत अपने परिवार की गतिविधियों से पूर्ववत् लगाव रखते हैं, जबकि 26.40 प्रतिशत वृद्धों का लगाव पूर्ववत् नहीं रहा है अर्थात् इसमें परिवर्तन हुआ है। ग्रामीण एवं नगरीय परिप्रेक्ष्य में परिवार की सत्ता रह गई है। विचार करने पर सारिणी स्पष्ट करती है कि पारिवारिक गतिविधियों के साथ पूर्ववत् लगाव वाले वृद्धों में नगरीय वृद्धों 79.60 प्रतिशत की संख्या ग्रामीण वृद्धों (67.60 प्रतिशत) की तुलना में अधिक है। इसी प्रकार पूर्ववत् लगाव न रखने वाले वृद्धों में नगरीय वृद्धों (20.40 प्रतिशत) की अपेक्षा ग्रामीण वृद्धों (32.40 प्रतिशत) की संख्या अधिक है।

निष्कर्ष

वृद्ध लोगों की पारिवारिक स्थिति से सम्बन्धित उपर्युक्त पूर्ण विश्लेषण के प्रकाश में कहा जा सकता है कि वृद्धों के परिवार चार प्रकार की संरचनाओं में विभाजित है– प्रथम अकेले पति अथवा पत्नी वाले परिवार, द्वितीय वे परिवार जिनमें पति–पत्नी दोनों निवास करते हैं, तृतीय वे परिवार जिनमें पति अथवा पत्नी अथवा पति–पत्नी तथा उनके अविवाहित बच्चे निवास करते हैं तथा चतुर्थ वे परिवार जिनमें पति अथवा पत्नी अथवा पति–पत्नी तथा उनके विवाहित एवं अविवाहित बच्चे निवास करते हैं। परिवार में वृद्धों की सत्ता एवं प्रभाव के सम्बन्ध में देखा गया है कि अपनी वृद्धता से पूर्वकाल में 82.58 प्रतिशत वृद्धों के हाथ में अपने–अपने परिवारों की सत्ता

थी, जबकि वृद्धता के पश्चात् वर्तमान में मात्र 12.88 प्रतिशत वृद्धों के हाथ में वृद्धों की सत्ता एवं प्रभाव के सम्बन्ध में ग्रामीण और नगरीय वृद्धों की स्थिति समनुरूप है। वृद्धता काल में परिवार के सदस्यों के साथ अंतःक्रियाओं के सम्बन्ध में देखा गया है कि अधिसंख्यक वृद्धों (43.60 प्रतिशत) के सम्बन्ध परिवार के साथ पूर्ववत् एवं सामान्य हैं। 30 प्रतिशत इनमें 'कुछ–कुछ' तथा 26.40 प्रतिशत वृद्ध 'स्पष्टतः परिवर्तन' का अनुभव करते हैं। यहाँ यह भी देखा गया कि सामान्य एवं पूर्ववत् सम्बन्धों की श्रेणी में ग्रामीण वृद्धों (27.20 प्रतिशत) की तुलना में नगरीय वृद्धों (60 प्रतिशत) की संख्या अधिक है। परिवार के वृद्धों के साथ सम्बन्धों के साथ–साथ परिवार के प्रति स्वयं वृद्धों की अंतःक्रियाओं के सम्बन्ध में देखा गया कि अधिकांश वृद्ध (73.60 प्रतिशत) पारिवारिक गतिविधियों के साथ पूर्ववत् लगाव रखते हैं।

संदर्भ

1. रानी वंदना, वृद्धजन समस्यायें एवं प्रतयाशायें, बरेली, 1999
2. अग्रवाल, गिरिराज शरण ष वृद्धावस्था की कहानियाँ, प्रीाात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999, पृ. 115–116
3. प्रसाद चंद्र मौलेश्वर : वृद्धावस्था : बाग्बाँ से आगे बुक, होलिक पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ. 11–16